Greh Laxmi

This my fault?

Date: 06-03-2010 | Edition: National | Page: 54 | Source: Bureau | Clip size (cm): W: 19 H: 26

स्वास्थ्य

इसमें मेरा क्या दोष?

Rashmi Dwivedi
rashmi@dpb.in

> समाज भूल जाता है कि वह बांझ से पहले किसी की बेटी, बहन और पत्नी भी है।

आज शीला की ननद की गोदभराई का अवसर था। घर में चारों तरफ चहल-पहल हो रखी थी। घर के लोगों ने इस अवसर पर काफी लोगों को बुलाया था। सारी महिलाएं शीला की नदद की गोदभराई की रस्म करने के लिए बेताब थीं। शीला भी बेहद खुश थी कि उसकी ननद कितनी खुश है, लेकिन जब शीला ने अपनी खुशी का इज़हार करते हुए अपनी ननद को गले से लगाया तो उसकी सास ने अपनी बेटी को अलग खींचते हुए कहा कि यह क्या कर रही हो? अपनी काली छाया मेरी बेटी पर मत डालो। शीला अपनी सास का चेहरा देखती रह गई। उसकी सास ने कहा, मैं भी दादी बनना चाहती हूं, लेकिन शादी के दो साल होने के बाद भी आज तक मेरी यह इच्छा अधूरी की अधूरी रह गई, क्योंकि तुम बांझ हो! तुम मां नहीं बन सकती, कम से कम अपनी काली परछाई मेरी बेटी पर न पड़ने दो। तुम्हारी काली छाया मेरी बेटी के होने वाले बच्चे को नुकसान पहुंचा सकती है। न जाने शीला को ये कटीले शब्द कितनी बार सुनने को मिले होंगे। घर में हो या बाहर हर कोई अब उसकी छाया से डरने लगा था। कहते थे कि बांझ का साया पड़ना अशुभ होता है, लेकिन आज तो सबके सामने उसके घर के लोगों ने ही उसे अशुभ करार कर दिया। क्या सचमुच एक बांझ औरत की परछाई खराब होती है? क्या उसमें सिर्फ उसका ही दोष है कि

> क्यों एक बांझ स्त्री को गोदभराई के रस्म में शामिल होने का हक नहीं? क्यों बांझ स्त्री समाज द्वारा तिरस्कृत की जाती है? आखिर उसे भी है जीने का हक, क्योंकि वह बांझ से पहले एक स्त्री है।

एक औरत के होते हैं चार रूप
बेटी, बीवी, बहू और माँ.

Greh Laxmi

This my fault?

Date: 06-03-2010 | Edition: National | Page: 54 | Source: Bureau | Clip size (cm): W: 19 H: 26

वह मां न बन सकी? न जाने शीला जैसी कितनी औरतें होंगी जो बांझपन की समस्या से लोगों के ताने बर्दाश्त कर रही होंगी। आखिर क्यों ऐसी महिलाएं किसी की खुशी में शामिल होने के काबिल नहीं? उन्हें अपनी जिंदगी जीने का हक नहीं? मां न बन पाने की वजह से वो जीना तो नहीं छोड़ सकती है। बांझपन की वजह से वह क्यों अन्य महिलाओं के द्वारा तिरस्कृत की जाए? आखिर क्या कभी यह समाज या उसके घर के सदस्यों ने यह जानने की कोशिश की कि वह बेचारी प्रतिदिन इस दर्द को भुलाने के लिए कितनी बार अपनी आंखों से निरंतर आंसुओं की बौछार करती होगी। शायद ही उसके आंसू कोई पोंछने वाला हो। क्या वह नहीं चाहती है कि वह भी मां बने, उसकी भी गोद भराई की रस्म हो? उसे भी कोई मां कह के पुकारे? मगर उसके भाग्य में ऐसा नहीं है तो यह समाज क्यों उसे ताने सुना-सुना कर यह हमेशा एहसास कराए कि वह एक बांझ है और बांझ होना पाप है। वह इस निर्दयी दुनिया से क्यों इतनी भी उम्मीद नहीं रख सकती कि वह दूसरों की खुशियों में शामिल हो सके, आखिर क्यों?

क्या है बांझपन?

दरअसल बांझपन का अर्थ है 1 साल तक असुरक्षित संभोग के बाद भी गर्भधारण न कर पाना। न जाने इस बिमारी से कितनी सारी महिलाएं जूझ रही हैं। अगर देखा जाए तो प्राकृतिक रूप से गर्भधारण करने के लिए जरूरी है कि शुक्राणु, गर्भाशय, नली और अंडाशय पूर्ण रूप से स्वस्थ हो। स्वस्थ दंपति में प्राकृतिक रूप से गर्भधारण की संभावना लगभग 15 प्रतिशत प्रतिचक्र होती है।

कई चिंतित युवा दंपति गर्भधारण करने में असफल रहने पर शादी के 3-4 महीने बाद ही बांझपन विशेषज्ञों के पास आ जाते हैं। ऐसे दंपतियों को परामर्श देने और यह भरोसा दिलाने की जरूरत है कि जिनमें शुक्राणु की संख्या कम होती है या फिर जिनमें पॉलिसिस्टिक ओवेरियन सिड्रोम या इंडोमेट्रियोसिस जैसी कोई परेशानी होती है। ऐसे दंपतियों को गर्भधारण करने के लिए चिकित्सा की जरूरत होती है।

बदलनी होगी मानसिकता

इससे जुड़े दो मुद्दे ऐसे हैं जिनको सुलझाना जरूरी है। पहला है- मरीजों और चिकित्सा समुदाय के बीच उचित जागरूकता होना ताकि ऐसे मरीजों को सही समय पर सही इलाज मिल सके। और दूसरा है- सामाजिक जागरूकता

> **एक औरत का मूल्य अभी भी उसकी शिक्षा और करियर में उपलब्धि की बजाए गर्भधारण करने की उसकी क्षमता से ही आंका जाता है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस संबंध में जिम्मेदार अक्सर खुद महिलाएं ही होती हैं।**

ताकि दंपति इस समस्या का सामना गरिमा और गोपनियता के साथ कर सकें। भारत में महिलाओं पर इस बात के लिए सामाजिक दबाव बहुत ज्यादा होता है कि शादी के बाद वो जल्दी से जल्दी गर्भधारण करें। यदि समस्या पुरुष में हो तो भी बांझ होने का बोझ मुख्यतः महिलाओं पर ही होता है। ऐसे में इस समस्या से जूझ रही महिलाएं गंभीर मनोवैज्ञानिक दबाव, उदासी, और सामाजिक बहिष्कार का शिकार हो जाती हैं।

बांझपन होने के कारण

- शारीरिक दोष महिला या पुरुष में।
- भावनात्मक दबाव।
- बार-बार वजन का घटना या बढ़ना।
- हॉर्मोनल असंतुलन, खासतौर पर थॉयराइड।
- वजॉइनिटिस।
- मासिक धर्म का न होना।
- सर्विकल म्यूकस में रसायनिक बदलाव होना।
- अंडाशय में गांठ का पड़ना।
- धूम्रपान, ट्यूमर तथा गर्भनिरोधक गोलियां लेने वाली को भी मां बनने में दिक्कत होती है।
- गर्भाशय टेढ़ा हो या फिर गर्भाशय में ट्यूमर हो तो भी गर्भधारण नहीं हो पाता।

सही चिकित्सा है जरूरी

एक महिला अंडों की निश्चित संख्या के साथ जन्म लेती है और 35 की उम्र तक आते-आते उसका अंडाणु भंडार कम होने लगता है। इसलिए बेहतर है कि बांझपन का इलाज काफी पहले करा लिया जाए ताकि इससे सफल परिणाम मिल सके। दुर्भाग्य से कई बार चिकित्सक इन मरीजों को कई सालों तक ऐसा इलाज देना जारी रखते हैं, जो कि दरअसल उन पर असरदार नहीं होता, जबकि उन्हें सहायक गर्भधारण की सलाह दी जानी चाहिए। यह बात काफी स्पष्ट है कि इलाज से केवल उन मरीजों की मदद की जा सकती है, जिनकी समस्या नली का बंद होना या शुक्राणु का कम होना हो। आजकल शहरों में युगलों का एक ऐसा समूह भी है जो पहले तो शादी देर से करते हैं और फिर गर्भधारण करने में भी देर करते हैं। इसलिए ये संदेश पहुंचाना महत्वपूर्ण है कि महिलाओं में गर्भधारण करने की संभावना सबसे ज्यादा 32 की उम्र के पहले ही होती है। बांझपन से ग्रसित दंपतियों में समस्या की सही पहचान हो जाने के बाद सामान्यतः इलाज सफल होता है। जिन महिलाओं में पॉलिसिस्टिक ओवेरियन या इंडोमैट्रियॉसिस की बीमारी होती है, उनके इलाज के लिए चिकित्सा की जाती है या फिर शल्य क्रिया का सहारा भी लिया जा सकता है। मरीजों के समूह के लिए और साथ

कुछ और कारण

- दबाव।
- मधुमेह।
- दांपत्य जीवन में मतभेद होना।
- बहुत कम संभोग का होना।
- धूम्रपान।
- ड्रग लेना।
- शारीरिक रूप से सक्षम न हो पाना गर्भाशय के लिए।

जन्म से होती है बेटी, शादी से बनती है बीवी, ससुराल में कहलाती है बहू और बच्चे से बनती है माँ.

imma™

Greh Laxmi

This my fault?

Date: 06-03-2010 | Edition: National | Page: 54 | Source: Bureau | Clip size (cm): W: 19 H: 26

Clip: 3 of 3

ही पुरुषों में हल्की-फुल्की समस्याओं का इलाज मल्टीपल एक फॉरमेशन को प्रेरित करके और उसके बाद इंट्रायूटेराइन इनसेमिनेशन से किया जा सकता है। जिन मरीजों में नली बंद होना या शुक्राणु की कमी जैसी समस्या हो उनके इलाज में आमतौर पर इंट्रा-सिस्टोप्लाज्मिक स्पर्म इंजेक्शन के साथ उसके बिना इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन का उपयोग किया जाता है। इसमें गुनैडोट्रॉपिन दवा के माध्यम से मल्टीपल एग फॉर्मेशन यानि ज्यादा अंडों के निर्माण को प्रेरित किया जाता है। इन अंडों को अल्ट्रासाउंड के माध्यम से ढूंढ़कर या तो उन्हें साधारण तरीके से शुक्राणु से मिला दिया जाता है (इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन) या फिर हर अंडे में एक-एक शुक्राणु डाला जाता है। (इंट्रा-सिस्टोप्लाज्मिक स्पर्म इजेक्शन) एक बार जब भ्रूण बन जाता है तो उन्हें दूसरे या तीसरे दिन अल्ट्रासाउंड की सहायता से देखते हुए गर्भाशय में डाल दिया जाता है। यदि यह तरीका ऐसी 10 महिलाओं के लिए अपनाया जाए जो पिछले पांच से ज्यादा सालों से गर्भधारण नहीं कर पा रही थीं तो उनमें 4-5 महिलाएं पहली बार में ही गर्भधारण कर लेती हैं। इस इलाज का खर्च एक से डेढ़ लाख रुपये के बीच आता है, जिसमें दवाओं का खर्च भी शामिल है।

महिला ही दोषी क्यों?

बांझपन के लिए सिर्फ एक महिला को ही दोषी ठहराना उचित नहीं है, क्योंकि एक पुरुष में भी कमी हो सकती है, लेकिन हमारा पुरुष प्रधान समाज इस बात को आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता और अपने सर का दोष अपनी पत्नी पर मढ़ कर अपनी मर्दानगी का एहसास कराता है। उसे तनिक भी लज्जा नहीं होती कि वह अपनी कमी को छुपाने के लिए अपनी पत्नी पर मां न बनने का लांछन लगा देता है। दरअसल गलती हम सबकी है। हम महिलाएं भी बांझपन से जूझ रही उस महिला को सांत्वना और दिलासा देने की बजाय उसे हीन भावना से देखती हैं। क्या हमने कभी यह समझा कि वह भी एक बांझ से पहले एक हम जैसी ही औरत है और उसे भी इस समाज में जीने का हक है। क्या बच्चा पैदा कर पाना ही स्त्री को संपूर्ण पारिभाषित करता है? उसकी शिक्षा तथा उसका रुतबा कुछ मायने नहीं रखता, ऐसा क्यों?

शायद हमारे पास इसका जवाब ना हो, लेकिन अगर हम अपने अंदर झांके तो हम ही मुजरिम हैं। ऐक औरत को यह एहसास दिलाने में कि वह एक बांझ है। शायद यह समाज भूल जाता है कि वह बांझ से पहले किसी की बेटी, बहन और पत्नी भी है। मगर इस समाज को बस यही याद रह जाता है कि वह एक बांझ है, आखिर क्यों?

हमारे देश में बांझपन से जूझ रही महिलाओं को सामाजिक रूप से हतोत्साहित करने की समस्या काफी ज्यादा है। एक औरत का मूल्य अभी भी उसकी शिक्षा और करियर में उपलब्धि की बजाए गर्भधारण करने की उसकी क्षमता से ही आंका जाता है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस संबंध में जिम्मेदार अक्सर खुद महिलाएं ही होती हैं। परिवार की बड़ी औरतें अक्सर बांझपन से पीड़ित महिला को सहारा देने की बजाए उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करती हैं। इस समस्या के समाधान के लिए जरूरी है कि व्यक्तिगत से लेकर सरकारी स्तर तक बड़े रूप में बहुस्तरीय ढंग से इसे सुलझाया जाए। हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि भारत की महिला को इतना सशक्त बनाया जाए कि वो बच्चे को जन्म देने में सक्षम हो या नहीं, लेकिन उसमें दुनिया का सामना करने का आत्मविश्वास हो। कन्या भ्रूण हत्या पर रोक लगाना, कन्याओं की गरिमा और शिक्षा सुनिश्चित के लिए बहुत मददगार होंगे। ऐसे कई फोरम या जनसभाएं हो सकती हैं जहां बांझपन से पीड़ित लोग एक-दूसरे से बातचीत कर सकें और ऐसे मरीजों से भी मिल सकें जिन्होंने सफलतापूर्वक इस बीमारी का इलाज कराया है ताकि उनका मनोवैज्ञानिक दबाव कम हो सके। बांझपन प्रमुखतः एक ऐसी बीमारी है, जिसका इलाज संभव है। पीड़ित लोगों को जरूरत है तो सिर्फ सही समय पर सही इलाज की। समाज को उनकी निंदा करने की बजाए उनकी तरफ मदद का हाथ बढ़ाना चाहिए। ■

सौजन्य : सेंटर ऑफ रिप्रोडक्टिव मेडिसिन एंड आई.वी.एफ. मैक्स हेल्थ केयर की वरिष्ठ सलाहकार डॉ. कावेरी बैनर्जी से बातचीत पर आधारित।

पर हर औरत को माँ बनने का सौभाग्य नहीं मिलता.